Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 7, July - 2026

DOIs:10.2018/SS/202607017 --:-- Research Paper / Article / Review

भारतीय ज्ञान परंपरा में औषधि ज्ञान

रीनू वर्मा
शोध छात्रा: इतिहास एवं संस्कृति विभाग, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात
शोध निर्देशिका: **डॉ.झेनामाबीबी कादरी**
सह प्राध्यापक, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात
rinu.verma89388@gmail.com

सार : भारत देश जिसकी भूमि ज्ञान की भूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा में जिसमें ज्ञान व विज्ञान का समन्वय है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन समय से ही समृद्ध रही है। इस ज्ञान परंपरा में शिक्षा प्रणाली महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। जिसमें प्राचीन समय में राजनीतिक, शौर्य, शास्त्रों, तथा चिकित्सा आदि का अध्ययन समाहित था। ये ज्ञानपरंपरा वेदों से होते हुए ऋषि- महर्षि से धीरे धीरे आने वाली पीढ़ियों अलग-अलग माध्यम से हस्तांतरित होते हुए, अपनी वर्तमान समय मे भी महत्ता बनाएं हुए है। भारतीय ज्ञान का सर्वप्रथम प्रकाश वेदों से मिलता है। इन वेदों मे ज्ञान के सभी क्षेत्रों का ज्ञान सम्मिलित हैं। इसी क्रम में इसमे आरोग्य हेतु औषधीय ज्ञान भी है। आरोग्य हेतु औषधि की आवश्यकता होती है, जिसके हेतु औषधि ज्ञान का विकास हुआ। इसी ज्ञान को इस लेख के द्वारा उल्लेखित किया जाएगा ।

बीज शब्द : आरोग्य, ज्ञान-परंपरा, औषधि , वेद, निवारण, आयुर्वेद ।

1. प्रस्तावना :

पृथ्वी पर सभ्यता का विकास हुआ, विकास के साथ साथ ही जलवायु परिवर्तित हुआ तथा पृथ्वी पर विकार या रोग ने प्रवेश किया। रोग निवारण हेतु औषध ज्ञान ने जन्म लिया और साथ ही औषधि का रोग के अनुसार जन्म हुआ, औषधि हेतु बनस्पति का प्रयोग हुआ जो भारतीय पारंपरिक ज्ञान में क्रमवत चलता रहा है। अन्य शब्दों मे मानव जाति के साथ ही जीव-जंतुओं, पेड़-पौधे आदि मे भी रोग समावेश किया जिसके निवारण के हेतु, चिकित्सा प्रणाली प्रारंभ हुई, जिसमें आयुर्वेद और सिद्धा चिकित्सा आतें है, जो परंपरा के रूप मे आज भी है। आयुर्वेद जो भारत की आरोग्य हेतु प्राचीन पद्धति है और सिद्धा पद्धति जो दक्षिण भारत की आरोग्य पद्धति है, इनमें औषध हेतु प्राकृतिक औषधि का प्रयोग होता है। औषधीय ज्ञान वेद, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण के साथ ही जैन ग्रंथ तथा बौद्ध ग्रंथों से गुजरतें हुए,शिक्षा स्थल तक उदाहणतः तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभि, उज्जयनी, काशी आदि प्रसिद्ध प्राचीन विश्वविद्यालय जहां की शिक्षा और शोध केंद्र से अनेकों देशों के शिक्षार्थियों को लाभ देते हुए, ये ज्ञान-परंपरा आगे बढ़ी और धीरे-धीरे अपनें वर्तमान रूप में आया है।

2.औषधि ज्ञान :

प्राचीन समय मे आरोग्य हेतु रोगों से दूर रहने की सलाह दी जाती थी और इसके हेतु आयुर्वेद और सिद्ध चिकित्सा पद्धति को प्रयोग मे लिया जाता था। आयुर्वेद चिकित्सा की सबसे प्राचीन पद्धति मे से आती है जो युगों से वर्तमान समय मे भी जीवित है। ये प्रकृति अधारित चिकित्सा पद्धति है।(१)इसी प्रकार सिद्ध चिकित्सा पद्धति भारत मे प्राचीन समय से ही है, जो आयुर्वेद की तरह ही आरोग्य हेतु प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग के कौशल से विकसित हुआ है, यह दक्षिण भारत के सबसे पुरानी औषधीय पद्धति बनी हुई है।(२) इन दोनों प्राचीन प्रणालियों मे यदि रोग हेतु बनस्पतियों का उपयोग औषधि के रूप मे की जाती थी। इसका प्रमाण औषधि ज्ञान के रूप मे वेदों मे मिलता है। सर्वप्रथम ऋग्वेद मे औषधि ज्ञान मिलता है। औषधीय ज्ञान का प्रमुख वेद अथर्ववेद है परंतु ऋग्वेद के मन्त्रों मे सामान्यतः प्राकृतिक वस्तुओं से आरोग्य की प्राप्ति बताई गए है, जैसें ऋग्वेद मे अनेक स्थानों पर औषधियो के राजा के रूप मे सोम का वर्णन किया गया है। बहुत से मंत्रों मे अश्वनी कुमारों का औषधीय आपजल और औषधियाँ, औषधियाँ मे वनस्पति का उल्लेख है अर्थात आम भाषा में जड़ी बूटियों का परंतु एक या दो से अधिक वनस्पतियों का मिश्रण नहीं था।(३) वैदिक मंत्रों से ही ज्ञात होता है की वैदिक युग मे हजारों औषधियों का ज्ञान मिलता था।" औषधि का अर्थ है कष्ट को दूर करने वाला, औषधियों हेतु सम्पूर्ण सुक्त है।(४)" यजुर्वेद मे भी औषधि ज्ञान के बहुत से मंत्र है। स् यजुर्वेद मे स्पष्ट है की अन्य विज्ञान की तरह ही चिकित्सा को

भी विज्ञान की तरह कहा गया है ,अध्याय ५ मे "प्रथमो दैव्य भीषक" अर्थात प्रथम दिव्य चिकित्सक के रूप मे रोगों को दूर करना है ।(५) अथर्ववेद मे कुछ वनस्पतियों के नाम उल्लेखित है। वनस्पतियों का उपयोग स्वतंत्र रुप में मिलता है। अथर्ववेद में भिन्न भिन्न औषधि का भिन्न प्रयोग था विस्तृत वर्णन दिया गया है। अथर्ववेद मे रोग के नाम भी मिलते है। अथर्ववेद मे औषधियों को खनने के समय तथा प्रयोग के समय मंत्रोच्चार होता था।(६) महाकाव्य मे भी औषधीय ज्ञान की जानकारी मिलती है। वाल्मिकी कृत रामायण में वृक्ष- वनस्पति तथा औषधि पर्वत का उल्लेख है। रामायण के युद्ध-कांड में औषधि पर्वत पर अध्याय है।(७) जब लक्ष्मण युद्ध में बेहोश हुए तब सुर्षण वैध ने सर्वप्रथम संजीवनी पर्वत का प्रयोग किया जो औषधीय पर्वत था। महाभारत मे भी रोग का उल्लेख है तथा भगवान धन्वंतरि के अवतरण का उल्लेख है। पाणिनी ने अपने ग्रंथ मे भी औषधि और औषध मे भेद बताया है अर्थात वनस्पति और जड़ी- बूटिया को औषधि तथा बनी दवाई औषध है।(८) इसी क्रम मे जैनग्रंथ , बौद्ध ग्रन्थ, ब्राहमण ग्रंथ, पुराणों, उपनिषद् , स्मृति आदि मे भी मानव आरोग्य हेतु प्राचीन चिकित्सा पद्यति और औषधि के ज्ञान के विषय मे विस्तृत उल्लेख है। ये औषधि ज्ञान धीमे धीमे आने वाली पीढ़ी मे हस्तांतरित होती गई जिसके माध्यम बने ऋषि-मुनि तथा वैद्य। वैद्य की परंपरा का प्रथम उल्लेख रामायण मे है। अष्टांगहृदय जो वग्गभट्ट द्वारा रचित है इसमे भी औषधियों का क्रम है।

इस औषध ज्ञान परंपरा को संहिता में अर्थात चरक संहिता और सुश्रूष संहिता में संग्रहित किया गया है। जिस प्रकार महर्षि आत्रेय के उपदेशों का संग्रह कर आचार्य अग्निवेश ने अग्निवेश- तंत्र की रचना की है उसी प्रकार महर्षि सुश्रुत ने धन्वंतरि जो चिकित्सा के देव है उनके उपदेशों को संग्रहीत करके सुश्रुतसंहिता का निर्माण किया।(९) सुश्रुत जो पहले काशी के प्रसिद्ध सर्जन थे। सुश्रुत संहिता जिसमे १८४ अध्याय, ११२० रोग तथा ७०० औषधीय पौधे का वर्णन है।

3.निष्कर्ष :

भारतीय ज्ञान-परंपरा में औषधीय ज्ञान परंपरा निरंतर आगे बढ़ती रही है जो वेद से लेकर संहिताओं मे तथा ग्रंथों मे इसकी प्रामाणिकता मिलती है। जिसकी महत्त्वपूर्णता प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक बनी हुई है। औषध ज्ञान-परंपरा मे वनस्पति के साथ ही वनस्पति पर्वत अर्थात पर्वतों का भी वर्णन है साथ ही इनके प्रयोग कर उपचार करने हेतु वैद्य ,ऋषि-मुनि आदि का भी उल्लेख है। साथ ही संहिता - ग्रंथ जो आज भी आयुर्वेद की चिकित्सा मे आवश्यक है इसका भी संग्रहण है।

संदर्भ सूची:

१- Jaiswal,Yogini S.,Williams ,Leonard L.(2016),'A glimpse of Ayurveda- The forgotten history and principles of Indian traditoinal medicine", Journal of Traditional and Complementary Medicine,USA

२-Adhikari, Partha Pradip, Paul,Satya Bhusan,(2017),'History of Indian Traditional Medicine: A Medical Inheritance', asian journal of pharmaceutical and clinical research, Assam.

३-विद्यालंकार,अत्रिदेव, (१९७०)'आयुर्वेद का वृहत इतिहास,' इलाहाबाद, पृ. सं. २०

४-एजन पृ. सं. २३

५- Singhjee, H.H.Bhagvat, (1999) 'A Short History of Aaryan Medical science', Varanasi, , page no. 24

६-शर्मा,प्रियव्रत, (१९७५) ' आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास,' वाराणसी, पृ. सं. ३२

७- शुक्ल,विद्याधर, त्रिपाठी,रविदत्त, (२०२२) 'आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय', दिल्ली, पृ. स ३१४

८- एजन पृ. सं. ३१७

९-एजन पृ. सं. ६१